Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 6 | JUNE 2024

उत्तर भारत के विशाल मैदान : एक विवेचना

दुर्गेश पंवार [1]

[1] **सहायक आचार्य, भूगोल, सेठ फूलचन्द छीतरमल जैन महाविद्यालय, पीसांगन, अजमेर.**

ABSTRACT:

हिमालय की तलहटी से बंगाल की खाड़ी तक विस्तारित उत्तर भारत के विशाल मैदान जिसे सिन्धु-गंगा के मैदान के रुप में भी जाना जाता है। ये मैदान कई सदियों से सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी प्रणालियों के अवसादों के निक्षेपण से निर्मित हुऐ है। ये मैदान भारतीय उप महादीप के सांस्कृतिक, आर्थिक और पारिस्थितकीय विकास के लिए अत्यधिक महत्व रखते हैं। यह भारत की सबसे नवीन स्थलाकृति होने के साथ- साथ यह विश्व के सबसे विशाल जलोढ मैदानों में से एक है।

KEYWORDS:

हिमालय, रेगिस्तान, दो आब ब्रहापुत्र।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th June 2024	30th June 2024

विषय प्रवेश:-

विशाल मैदान, जिसे सिन्धु-गंगा का मैदान या सिन्धु-गंगा, बहापुत्र के मैदान के रूप मे जाने वालों का विस्तार हिमालय के दक्षिण से लेकर प्रायद्वीपीय पठार के उत्तरी भाग तक फैले हैं। यह उत्तर में शिवालिक पर्वतमाला, पश्चिम में रेगिस्तान, दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार और पूर्व में पूर्वांचल की पहाड़ियों से घिरे है। इस पथ की कुल लम्बाई 3200 किलोमीटर है, जिसमें से लगभग 2400 किलोमीटर भारत में और शेष बांग्लादेश में है। उनकी औसत चौड़ाई 150-300 किलोमीटर है। वे पश्चिम में सबसे चौड़े है जहां उनकी चौड़ाई 500 किमी तक हो जाती है, और यह चौड़ाई पूर्व की और संकीर्ण होती जाती है। ये मैदान लगभग 1.8 लाख वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले है, जो इसे विश्व के सबसे विशाल जलोढ मैदानों में से एक बनाता है यह मैदान पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सो एवं असम राज्यों में फैले हुऐ है। चरम क्षैतिजता इस मैदान की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। लगभग 200 मीटर की औसत ऊंचाई और समुद्र तल से लगभग 291 मीटर की अधिकतम ऊंचाई के साथ, इसका औसत ढाल केवल 15-20 सेमी हैं। सिंधु गंगा और ब्रह्मपुत्र के निक्षेपण से यह मैदान निर्मित हुए है। इन नदियों की तलघट ने प्रायद्विपीय और हिमालय के क्षेत्रों के बीच मौजुद व्यापक अवसाद को जमा कर दिया है। तृतीय काल मे, इंडो- ऑस्ट्रेलियाई प्लेट के यूरेशियन प्लेट की और बढ़ने से हिमालय का निर्माण हुआ। इन दो विवर्तनिकी प्लेटो के निरंतर अभिसरण के कारण हिमालय में उत्थान हुआ और एक बड़े सिंक्लाइन अर्थात् अभिनति के रूप में प्रायद्विप एवं हिमालय के मध्य एक गहरे अवसाद का जमाव प्रारम्भ हुआ है। हिमालय से बहने वाली नदियों के द्वारा अपने साथ बहुत अधिक मात्रा में लाए गए अवसाद के निक्षेपण के परिणामस्वरूप विशाल मैदानों का निर्माण हुआ।

क्षेत्रीय स्तर पर, भारत के विशाल मैदानों को 4 प्रमुख भागों - 1. राजस्थान का मैदान 2. पंजाब-हरियाणा का मैदान, 3. गंगा का मैदान 4. ब्रहापुत्र मैदान में, बांटा गया है

राजस्थान का मैदान विशाल मैडान के पश्चिमी भाग का निर्माण करता है इसमे थार या ग्रेट भारतीय रेगिस्तान शामिल है जो पश्चिमी राजस्थान और पाकिस्तान के आसपास के क्षेत्र को कवर करता है। राजस्थान के मैदान का पूर्वी भाग, जो रेगिस्तान है, को मरुस्थली के नाम से जाना जाता है। हालांकि सतह पर यह जलोढ मैदान जैसा दिखता है, लेकिन भूगार्भिक रुप से यह प्रायद्वीपीय पठार का हिस्सा है। इस तथ्य से सिद्ध होता है कि इसमें रेत का एक विशाल विस्तार है जिसमे नीस, शिस्ट, और ग्रेनाईट की कुछ चटटाने है। इसका पूर्वी भाग चट्टानी है, जबकि पश्चिमी भाग स्थानान्तरित रेत के टीलों से ढका हुआ है, जिन्हे स्थानीय भाषा मे धरियान कहा जाता है। थार मरुस्थल का पूर्वी भाग अरावली पर्वतमाला तक का अर्द्ध शुष्क मैदान है जिसे राजस्थान बागर के नाम से जाना जाता है। अरावली से निकलने वाली कई छोटी मौसमी धाराए इस क्षेत्र में बहती है और छोटे छोटे उपजाऊ, क्षेत्रों का निर्माण करते है, जिन्हें रोही कहा जाता है। लूनी नदी ऐसी ही एक धारा का उदाहरण है जो अरावली के दक्षिण पश्चिम में बहती है और कच्छ के रण में गिरती है। थार मरुस्थल में कई खारी झीले भी है जैसे सांभर, डीडवाना, खाटू आदि।

पंजाब-हरियाणा का मैदान राजस्थान के मैदान के पूर्व और उत्तर पूर्व की ओर स्थित है। सम्पूर्ण मैदान पंजाब और हरियाणा राज्यों में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व दिशा में 640 किमी की लबाई तक फैला हुआ है। मैदान का अधिकतर भाग गाद से बना है इसीलिए मिट्टी छिद्र पूर्ण है। नदी के किनारों के पास का मैदानी भाग जो जमीन के नवीन जलोढ के निक्षेपण द्वारा निर्मित होता है, को बेट कहा जाता है। मैदान के तलहटी क्षेत्र, जो बड़े पत्थरों, बजरी, रेत और मिट्टी से बने होते हैं, उन्हें भाबर मैदान के रुप में जाना जाता है। इस मैदान का पंजाब भाग पांच नदियों - सतलुज , व्यास, रावी, चिनाब और झेलम के जलोढ़ निक्षेपो के परिणाम स्वरूप द्वारा निर्मित हुआ है। इस मैदान का पंजाब भाग मुख्य रूप से पूर्व से पश्चिम की ओर 5 दो आब से बना है, जो बिस्त - जालंधर दो आब, बारी दो आब, रचना दो आब, चाज दी आब, सिंध सागर दो आब के रुप में विस्तृत है। पंजाब - हरियाणा मैदान मे बेट भूमि, धाय और चोस प्रमुख विशेषता है।

विशाल मैदान का सबसे बडा भाग गंगा का मैदान है जिसका क्षेत्रफल 3.75 लाख वर्ग किमी है। यह मैदान गंगा नदी के हिमालयी और प्रायद्वीपीय सहायक नदियों के जलोढ़ निक्षेपण से बना है। सम्पूर्ण मैदान का सामान्य ढलान पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर है। भौगोलिक भिन्नताओं के आधार पर गंगा के मैदान को -ऊपरी गंगा का मैदान, मध्य गंगा का मैदान, निचला गंगा का मैदान में विभाजित किया गया है।

बह्मपुत्र का मैदान देश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है इसे ब्रह्मपुत्र घाटी या असम घाटी या असम मैदान के जाना जाता है हालांकि इसे गंगा का मैदान का पूर्वी विस्तार माना जाता है, यह वास्तव मे एक अलग भौगोलिक इकाई है। यह उत्तर में अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी हिमालय, पूर्व में पटकाई बूम और नागा पहाड़ियों, दक्षिण में गारी- खासो जयंतिया और मिकिर पहाड़ियो और पश्चिम में भारत-बांग्लादेश सीमा एवं निचले गंगा मैदान की सीमा से घिरा हुआ है। इस घाटी में बहपुत्र की सहायक नदियाँ उत्तर की ओर प्रवाहित होती है। इसमें कई नदी विशेषताओं का निर्माण हुआ होता है जैसे जलोढ़ पंख, रेत की चट्टाने, नदी के किनारे आक्सबों झीले आदि। ब्रह्मपुत्र द्वारा निर्मित माजुली द्वीप विश्व का सबसे बड़ा नदी

द्वीप है।

विशाल मैदान की कुछ विशिष्ट भू-आकृति विज्ञान को भाबर, तराई, खादर, बांगर और रेह या कल्लर तथा भूर को विशेषता के रूप में देखा गया है। यह विशाल मैदान देश के कुल क्षेत्रफल के एक तिहाई से भी कम भाग में विस्तारित है लेकिन देश की कुल आबादी का 40 प्रतिशत से अधिक यही निवास करता है। इन मैदानी इलाकों की समतल और उपजाऊ जलोढ मिटटी बड़े पैमाने पर कृषि गतिविधियों को संभव बनाती हैं। यही कारण है कि उत्तेरी मैदानों को "राष्ट्र का अन्न भण्डार कहा जाता है। " सुगम भौगोलिक उच्चावच और टोपोग्राफी के कारण इस क्षेत्र में सड़को और रेलवे का एक व्यापक नेटवर्क है जिसके परिणामस्वरूप व्यापक शहरीकरण और औद्योगीकरण हुआ है।

साराश:-

भौगोलिक विशेषताओं से कही अधिक उत्तरभारत के विशाल मैदान भारतीय सभ्यता के उद् गम स्थल रहे है। ये उपजाऊ मैदान सदियों से भारतीय आबादी का पोषण करते रहे है। वर्तमान में घटती ऊर्वरता, जल की कमी, जनसंख्या विस्फोट का सामना यह मैदान कर रहे है। विशाल मैदानो की स्थिरता सुनिश्चित करना न केवल उपमहाद्वीप के लिऐ बल्कि पूरे विश्व की पारिस्थितवीय और सांस्कृतिक विरासत के लिए महत्वपूर्ण है।

REFERENCES

1. माजिद हुसैन - भौतिक भूगोल
2. सविन्द्र सिंह - 'भौतिक भूगोल
3. डॉ. चर्तुभुज मामोरिया – भूगोल
4. डॉ. गीता – भूगोल
5. डी.आर. खुल्लर भौतिक, मानव और आर्थिक भूगोल